2 जनवरी 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 19 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट के आयोजकत्व में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ के संयुक्त निर्देशन में आयोजित श्री आदिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सोमवार, दिनाँक 24 दिसम्बर से रविवार 30 दिसम्बर तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पर प्रासंगिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित जयकुमारजी जैन कोटा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दन कुमारजी शास्त्री खनियांधाना ने सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित देवेन्द्रजी जैन बिजौलिया, पण्डित ऋषभजी जैन छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी जैन पिड़ावा, पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल, पण्डित संजीवजी जैन दिल्ली आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती स्नेहलता-शान्तिलाल चौधरी भीलवाड़ा को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री नेमीचन्द-उर्मिला बघेरवाल भीलवाड़ा, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री नरेश-अर्चना पाटोदी भीलवाड़ा एवं यज्ञनायक श्री महावीर-निर्मला चौधरी भीलवाड़ा थे। यागमंडल विधान का उद्घाटन डॉ. पी.के. जैन परिवार भीलवाड़ा, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री निहालचन्द घेवरचन्द जैन परिवार जयपुर, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी भैंसा परिवार भीलवाड़ा एवं रत्नत्रय विधान का उद्घाटन श्री नरेशकुमार प्रदीप लुहाड़िया परिवार भीलवाड़ा ने किया।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्री कमलकुमारजी बड़जात्या परिवार मुम्बई के करकमलों द्वारा किया गया।

महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनांक 24 दिसम्बर को कालचक्र एवं दिनांक 25 दिसम्बर को सोलह स्वप्नों का प्रदर्शन लेजर द्वारा किया गया। दिनांक 27 दिसम्बर को बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री अजितप्रसादजी जैन परिवार दिल्ली को मिला। पालना झूलन श्री त्रिलोकचन्दजी छाबड़ा परिवार एवं श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ ने किया तथा उसका उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी बजाज परिवार कोटा ने किया। दिनांक 28 दिसम्बर को उज्जैन मुमुक्षु मण्डल द्वारा 'इतिहास के दो सूर्य' नामक नाटिका का बहुत सुन्दर मंचन किया गया।

इस महोत्सव में सीमंधर भगवान, आदिनाथ भगवान एवं महावीर भगवान की प्रतिमाओं के अतिरिक्त चौबीस तीर्थंकरों की रत्न प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही, जिसमें लगभग 5 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

महोत्सव के सभी कार्यक्रम पण्डित अशोकजी लुहाड़िया के निर्देशन में सम्पन्न हुये। ●

(आगामी कार्यक्रम...)

चन्देरी में पंचकल्याणक महोत्सव

चन्देरी (म.प्र.) में श्री आदिनाथ दि.जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन **दिनांक 27 जनवरी से 1 फरवरी 2013** तक किया जा रहा है। इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं अन्य समागत विद्वानों के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त होगा। प्रतिष्ठा की सम्पूर्ण विधि पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित राजेन्द्र कुमारजी टीकमगढ द्वारा संपन्न होगी। सभी साधर्मियों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ लेवें।

सम्पादक संघ का राष्ट्रीय अधिवेशन चन्देरी में

चन्देरी (म.प्र.) में अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 27 जनवरी को आयोजित होने जा रहा है। समारोह की अध्यक्षता डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा करेंगे। **- अखिल बंसल, महामंत्री**

सम्पादकीय – 91

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १६२

अब प्रस्तुत गाथा में आत्मा के चारित्र-ज्ञान-दर्शन का प्रकाश करते हैं। मूल गाथा इसप्रकार है –

जो चरदि णादि पेच्छदि अप्पाणं अप्पणा अणण्णमयं।
सो चारित्तं णाणं दंसणमिदि णिच्छिदो होदि।।१६२।।

(हरिगीत)

देखे जाने आचरे जो अनन्यमय निज आत्म को।
वे जीव दर्शन-ज्ञान अर चारित्र हैं निश्चयपने।।१६२।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि जो आत्मा अनन्यमय आत्मा को आत्मा से आचरता है, जानता है, देखता है; वह आत्मा ही चारित्र है, ज्ञान है, दर्शन है – ऐसा यहाँ समझाया है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र देव कहते हैं कि जो आत्मा वास्तव में स्वभाव नियत अर्थात् अनन्यमय आत्मा को आत्मा से जानता है। उसे आत्मा से आचरता है, स्वभाव में दृढ़रूप में स्थित अस्तित्व द्वारा अनुवर्तता है अर्थात् स्वभावनियत अस्तित्वरूप से परिणमित होकर अनुसरता है, स्व-पर-प्रकाशकरूप से चेतता है, अनन्य आत्मा को आत्मा से देखता है अर्थात् यथातथ्य रूप से अवलोकता है; वह आत्मा ही वास्तव में चारित्र है, ज्ञान है, दर्शन है – ऐसा कर्त्ता-कर्म-करण के अभेद के कारण निश्चित है। इससे ऐसा निश्चित हुआ कि चारित्र-ज्ञान-दर्शनरूप होने के कारण आत्मा को जीवस्वभाव नियत चारित्र जिसका लक्षण है – ऐसा निश्चय मोक्षमार्गपना अत्यन्त घटित होता है। अर्थात् आत्मा ही चारित्र-ज्ञान-दर्शन होने के कारण आत्मा ही ज्ञान-दर्शनरूप जीवस्वभाव में दृढ़रूप से स्थित चारित्र जिसका स्वरूप है – ऐसा निश्चय मोक्षमार्ग है।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

देखे जाने अनुचरै, जो आपन कौं आप।
सो दृग-ग्यान-चरित्र पद, निहचै पर न मिलाप।।२१८।।

(सवैया इकतीसा)

आप माहिं आपरूप पर माहिं पर तातैं,
ग्यानी आप माहिं चरै आपरूप जानि कै।
स्व-पर प्रकास पुंज अपना सरूप जानै,
आप रूप जैसा तैसा देखै आप मानिकै।।
तातैं है चरित आप ग्यान दृग औमिलाप,
कर्ता-कर्म-करन की पद्धति पिछान कै।
भेदभाव त्यागि निरभेद-सुधा पान करि,
सुद्ध मोख पन्थी होइ कर्मपुंज भानि कै।।२१९।।

(दोहा)

दरसन मैं दरसन लसै, ग्यान माहिं फुनि ग्यान।
चारित मैं चारित भला, तीनौं समरस भान।।२२०।।

कवि हीरानन्दजी ने इस गाथा के आधार पर जो काव्य लिखे, उनका सामान्य अर्थ इस प्रकार है। जो पर से भिन्न स्वयं का सामान्य अवलोकन करे, अपने स्वरूप को विशेषरूप से जानें तथा उसी में रमे, यही निश्चय सम्यग्दर्शन, ज्ञान व चारित्र का स्वरूप है।

ज्ञानी निज आत्मा सम्यक् प्रतीतिपूर्वक स्व-पर का भेद विज्ञान करके स्वयं में स्थिर होते हैं।

इसप्रकार ज्ञानी कर्त्ता-कर्म आदि के स्वरूप को पहचान कर सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकता द्वारा अपने में उत्पन्न भेद-विकल्पों को त्याग कर अभेद अखण्ड एक आत्मा के आनन्द का अमृतपान करते हुए कर्मपुंज को जलाकर मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं।

गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी अपने व्याख्यान में कहते हैं कि जो पुरुष अपने ज्ञाता स्वरूप से ज्ञानादि गुण पर्यायों से अभेद एक रूप आचरण करता है, जानता है, श्रद्धा करता है, वह आत्मा ही स्वयं चारित्र है। ज्ञाता-दृष्टा एवं आचरण करने वाला – ये तीनों नामभेद रहित स्वयं दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप होते हैं। राग रहित स्वरूपानन्द में स्थित होने का नाम दर्शन-ज्ञान-चारित्र है। जितनी मात्रा में राग रहता है, उतनी मात्रा में मोक्षमार्ग नहीं है। चिदानन्दमय परम शांत-वीतरागी आनन्द की मग्नता का नाम मोक्षमार्ग है।

तात्पर्य यह है कि वस्तुतः जो आत्मा अपने में अभेदरूप आचरण करता है तथा अन्तर आनन्द में लीन होता है, वही चारित्र है; क्योंकि अभेद दृष्टि से आत्मा गुण-गुणी भाव से एक है। जिस तरह नीबू और उसकी खटास (खट्टापन) एक है, उसी प्रकार नित्य आनन्द स्वभाव एवं स्वभाववान आत्मा एक है।

इसप्रकार निर्मल प्रतीति अनुसार जो आत्मा अपने स्वभाव से निश्चलभाव में प्रवर्तता है। वही मोक्षमार्ग है। ●

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

13 जनवरी 2013	बरौदास्वामी	शिलान्यास
27 जन.से 1 फर.2013	चन्देरी	पंचकल्याणक
2 से 5 फरवरी	मंगलायतन	वार्षिकोत्सव

पण्डित कैलाशचंदजी नहीं रहे

बुलन्दशहर (उ.प्र.) निवासी पण्डित कैलाशचन्दजी जैन का 101 वर्ष की आयु में दिनांक 19 दिसम्बर को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपने गुरुदेवश्री के सानिध्य में खूब धर्मलाभ लिया एवं जीवनभर उसके प्रचार-प्रसार हेतु संलग्न रहे। ज्ञातव्य है कि आप मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) निवासी श्री पवनजी जैन के पिताजी थे। आपकी स्मृति में श्री टोडरमल स्मारक भवन में 19 दिसम्बर को सायंकाल शोकसभा रखी गई।

शोक समाचार

जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती चन्द्रोदेवी जैन का दिनांक 16 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक अनुज शास्त्री की दादीजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त करें – यही मंगल भावना है।

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

108 पाँचवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

बहुत से लोग कहते हैं कि हम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए क्या करें? प्रतिदिन एक-दो घंटे आत्मा का ध्यान करें। आपके यहाँ इसप्रकार का कोई प्रशिक्षण दिया जाता हो तो बतायें, हम भी उसमें शामिल हो जावें। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए हम कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। यदि कुछ खर्च करना पड़े तो हम उसमें भी पीछे नहीं रहेंगे।

अरे, भाई ! तुम तो वह हो, जिसके दर्शन का नाम सम्यग्दर्शन है, जिसके जानने का नाम सम्यग्ज्ञान है और जिसमें लीन होने का नाम सम्यक्चारित्र है, ध्यान है।

कर्तृत्व का यह तीव्रतम विकल्प, यह आकुलता-व्याकुलता ही सम्यग्दर्शन प्राप्त होने में सबसे बड़ी बाधा है। करने-धरने के ये संकल्प-विकल्प टूटते ही सम्यग्दर्शन होने में देर नहीं लगेगी। **धर्म करने की नहीं, होने की चीज है। यदि करना ही है तो तत्त्वनिर्णय करो, तत्त्वनिर्णय करने का पुरुषार्थ करो, प्रयास करो, स्वाध्याय करो। खर्च करने से सम्यग्दर्शन नहीं होता। सम्यग्दर्शन पैसों से प्राप्त होनेवाली वस्तु नहीं है।**

धर्म में भावुकता के लिए कोई स्थान नहीं है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप मोक्षमार्ग तो एक समझने का मार्ग, ज्ञान का मार्ग है। **इसमें देह की क्रिया और रागभाव को कोई स्थान प्राप्त नहीं है। यह ज्ञानमार्ग तो वीतरागी मार्ग है। यह तो सहज ज्ञाता-दृष्टा रहने रूप है।**

कुछ लोग तो अत्यन्त दीनभाव से वीतरागी भगवान से भी भोगों की भीख माँगते देखे जाते हैं; उनके सामने गिड़गिड़ाते देखे जाते हैं।

अरे, भाई ! जैनधर्म किसी के सामने गिड़गिड़ाने का धर्म नहीं है; क्योंकि जैनधर्मानुसार तो प्रत्येक आत्मा स्वयं परमात्मा है, स्वयं ज्ञान का घनपिण्ड, आनन्द का रसकंद है, अनंत शक्तियों का संग्रहालय है। ऐसा भगवान आत्मा किसी अन्य के समक्ष सुख की भीख माँगे - यह शोभा नहीं देता।

यहाँ इस रहस्यपूर्णचिट्ठी में सुखी होने के उपाय के रूप में ही सविकल्प से निर्विकल्प होने की विधि बताई जा रही है।

सविकल्प से निर्विकल्प की चर्चा के संदर्भ में जो बात कही थी; उसके अन्त में कहा था कि जो ज्ञान इन्द्रियमन में प्रवर्तता था, यद्यपि वही ज्ञान अब अनुभव में प्रवर्तता है; तथापि **अनुभव में प्रवर्तित ज्ञान को अतीन्द्रिय कहते हैं।**

अब उसी बात को आगे बढ़ाते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैंह्न

''तथा इस स्वानुभव को मन द्वारा हुआ भी कहते हैं; क्योंकि इस अनुभव में मतिज्ञान-श्रुतज्ञान ही हैं, अन्य कोई ज्ञान नहीं है।

मति-श्रुतज्ञान इन्द्रिय-मन के अवलम्बन बिना नहीं होता, सो यहाँ इन्द्रिय का तो अभाव ही है; क्योंकि इन्द्रिय का विषय मूर्तिक पदार्थ ही है तथा यहाँ मनज्ञान है; क्योंकि मन का विषय अमूर्तिक पदार्थ भी है, इसलिए यहाँ मन-संबंधी परिणामस्वरूप में एकाग्र होकर अन्य चिन्ता का निरोध करते हैं, इसलिए इसे मन द्वारा कहते हैं। *'एकाग्रचिन्तानिरोधोध्यानम्'* ऐसा ध्यान का भी लक्षण ऐसे अनुभव दशा में सम्भव है।

तथा समयसार नाटक के कवित्त में कहा है ह्न

वस्तु विचार ध्यावतैं, मन पावै विश्राम।
रस स्वादत सुख ऊपजै, अनुभव याकौ नाम।।

इसप्रकार मन बिना जुदे ही परिणाम स्वरूप में प्रवर्त्तित नहीं हुए, इसलिए स्वानुभव को मनजनित भी कहते हैं; अत: अतीन्द्रिय कहने में और मनजनित कहने में कुछ विरोध नहीं है, विवक्षाभेद है।

तथा तुमने लिखा कि 'आत्मा अतीन्द्रिय है, इसलिए अतीन्द्रिय द्वारा ही ग्रहण किया जाता है' सो (भाईजी) मन अमूर्तिक का भी ग्रहण करता है, क्योंकि मति-श्रुतज्ञान का विषय सर्वद्रव्य कहे हैं। उक्तं च तत्त्वार्थसूत्रे - *'मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु।*[१]''[२]''

उक्त पंक्तियों का भाव आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी इसप्रकार स्पष्ट करते हैं -

''अमूर्तिक चिदानन्दस्वभाव के स्वानुभव में इन्द्रिय का तो निमित्त नहीं है; इन्द्रियाँ तो स्पर्शादि मूर्तद्रव्य के ही जानने में निमित्त हो सकती है; अमूर्त आत्मा के जानने में इन्द्रिय का अवलम्बन नहीं है। **मन अमूर्त वस्तु को भी जानता है** और मन का अवलम्बन अभी सर्वथा नहीं छूटा, क्योंकि अभी मति-श्रुतज्ञान है। अवधि या मन:पर्ययज्ञान का उपयोग स्वानुभव में नहीं होता, **स्वानुभव में मति-श्रुतज्ञानरूप उपयोग ही रहता है।** अवधि व मन:पर्ययज्ञान का विषय भी मूर्त - रूपी ही गिनने में आया है, **अरूपी आत्मवस्तु का स्वानुभव तो मति-श्रुतज्ञान द्वारा ही होता है।**

मति-श्रुतज्ञान सामान्यतया इन्द्रिय व मन के द्वारा वर्तते होने से यद्यपि इन्हें परोक्ष कहा है; तथापि **स्वानुभव के काल में इन्द्रिय का अवलम्बन छूटकर एवं बुद्धिपूर्वक मन का भी अवलम्बन छूटकर अतीन्द्रिय उपयोग हो जाने से इन्हें प्रत्यक्ष भी कहते हैं।** केवलज्ञान में असंख्य आत्मप्रदेश जैसे प्रत्यक्ष प्रतिभासित होते हैं, वैसे मति-श्रुतज्ञान में प्रत्यक्ष नहीं भासते; फिर भी **स्वानुभव में मति-श्रुत को प्रत्यक्ष कहा; क्योंकि स्वानुभव के काल में उपयोग आत्मा में एकाग्र होकर, इन्द्रिय व मन के अवलम्बन के बिना अतीन्द्रिय आनन्द का वेदन साक्षात् करता है। उपयोग अतीन्द्रिय हुए बिना अतीन्द्रिय आनन्द का वेदन नहीं कर सकता।**

इसप्रकार स्वसंवेदन तो प्रत्यक्ष है, परन्तु केवलज्ञानी की तरह आत्मप्रदेशों का स्पष्ट प्रतिभास न होने की अपेक्षा से परोक्षपना भी है। ऐसा प्रत्यक्ष-परोक्षपना ज्ञान में लागू होता है।[३] **(क्रमश:)**

१. तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय १, सूत्र २६
२. रहस्यपूर्णचिट्ठी : मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३४४
३. अध्यात्मसंदेश, पृष्ठ ६७-६८

सवाल आपके : जवाब हमारे

जब भी हम पाठशाला में पढते हैं या प्रवचन सुनते हैं तो हमारे मन में ऐसे अनेक सवाल खड़े होते हैं, जिनका हमें जवाब नहीं मिलता। क्या आपके मन में भी ऐसे सवाल हैं ? यदि हाँ, तो निम्न पते पर लिख भेजिये - डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, ए-1704, गुरुकुल टॉवर, जे.एस.रोड़, दईसर (वेस्ट) मुम्बई-68 यहाँ आपके जवाब मिलेंगे - डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया की आगामी कृति सवाल आपके : जवाब हमारे में। सवाल भेजने की अंतिम तिथि 15 मार्च है।

2 जनवरी 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2013

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 27 जनवरी 2013	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
सोमवार 28 जनवरी 2013	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
मंगलवार 29 जनवरी 2013	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

- ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक - परीक्षा बोर्ड)

साप्ताहिक गोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा होने वाली साप्ताहिक रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 1 दिसम्बर को 'जैन न्याय के विभिन्न महत्वपूर्ण विषय' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. श्रीयांसजी शास्त्री जयपुर (विभागाध्यक्ष-जैनदर्शन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान) ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सचिन जैन सागर (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं नितिन जैन झालरापाटन (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। गोष्ठी का संचालन नवीन शास्त्री एवं सुमित शास्त्री ने किया। अध्यक्ष महोदय को ग्रन्थ भेंट एवं आभार प्रदर्शन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

भुज (गुज.) : यहाँ श्रीमत् राजचन्द्र साधना केन्द्र में दीपावली के पावन प्रसंग पर 4 दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक विद्वान पण्डित जितेन्द्र सिंह यादव द्वारा तीनों समय आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

धन्यवाद !

1. घुवारा (म.प्र.) निवासी श्री प्रमोद कुमारजी मस्ताई द्वारा अपने सुपुत्र प्रखर मस्ताई के आई.टी.आई. में चयन होने के उपलक्ष्य में 1100/- रुपये टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिए प्रदान किये गये।

2. कुशलगढ-बांसवाड़ा (राज.) निवासी श्री हंसमुखलालजी शाह दिनांक 31 दिसम्बर 2012 को सेवानिवृत्त हो रहे हैं। इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1000 रुपये प्राप्त हुये, एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद!

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127